INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

हिन्दी उपन्यासों में नारी की स्वतंत्रता और अधिकार

Annu Kumari Maan, Assistant Professor, Govt. Girls College, Shahpura (Bhilwara)

सार

इस सार में भारतीय महिला उपन्यासकारों के लेखन का महत्वपूर्ण पहलू बताया गया है, जिसमें वे महिला चेतना और सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ये लेखिकाएं अपने लेखन के माध्यम से न केवल महिला उत्पीड़न और हाशिए पर रहने वाली महिलाओं के बारे में बात करती हैं, बल्कि विकास, आत्म-जागरूकता, वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी जैसे आधुनिक मुद्दों पर भी विचार करती हैं। कई महिला लेखक, जैसे अरुंधति रॉय, किरण देसाई और झुंपा लाहिड़ी, ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त किए हैं, जो भारतीय साहित्य के लिए गर्व का कारण है। इसके अलावा, डायस्पोरिक महिला उपन्यासकार अपने खोए हुए मातृभूमि की यादों के माध्यम से अपनी कहानियों को प्रस्तुत करती हैं, जैसा कि सलमान रुश्दी के शब्दों में देखा गया है।

परिचय

नारीवाद शब्द लिंगों के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समानता के सिद्धांत को दर्शाता है। यह महिलाओं की मुक्ति और उनके अधिकारों की रक्षा करने की विचारधारा है, जो विशेष रूप से पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की स्थिति से संबंधित मुद्दों को संबोधित करती है। नारीवादी आंदोलन, जो पश्चिम में उत्पन्न हुआ था, एक विरोध की आवाज के रूप में सामने आया, जो महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करता है। भारतीय अंग्रेजी साहित्य में नारीवादी मुद्दे महत्वपूर्ण स्थान पर हैं, जहां महिला पात्रों को पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर आते हुए और अपनी पहचान की तलाश करते हुए चित्रित किया गया है। महिलाओं ने न केवल साहित्य को प्रोत्साहित किया, बल्कि साहित्य की रचनाकार भी बनीं और उनके संघर्ष और संवेदनाओं को उजागर किया।

भारती मुखर्जी, भारतीय डायस्पोरा की प्रमुख लेखिका, ने अपने साहित्य में भारतीय महिलाओं के संघर्ष, पहचान की खोज और स्वतंत्रता की कहानी को बहुत सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास जैस्मिन में एक अवैध प्रवासी लड़की, जैस्मिन, की यात्रा को दर्शाया गया है, जो एक भारतीय गाँव की लड़की है और जो विदेश में निर्वासन और आप्रवासन का सामना करती है। इस उपन्यास के माध्यम से मुखर्जी ने विदेशी भूमि पर भारतीय महिलाओं के संघर्ष और आत्म-निर्भरता की खोज को उजागर किया है। उनका लेखन नारीवाद के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता और पहचान की खोज पर प्रकाश डालती हैं।

अंग्रेजी में भारतीय महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी को केंद्रित विषय के रूप में प्रस्तुत किया है, और एक महिला की पहचान की खोज उनके कथा साहित्य का एक आवर्तक विषय रहा है। शशि देशपांडे, जो स्वतंत्रता के बाद के युग की सबसे बेहतरीन और प्रतिष्ठित भारतीय अंग्रेजी उपन्यासकारों में से एक हैं, को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रमंडल लेखक पुरस्कार **2000** से सम्मानित किया गया है। उन्हें अपने उपन्यास **That Long Silence** के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। भारतीय संवेदनशीलता से भरपूर शशि देशपांडे ने

अपने उपन्यासों में महिलाओं के मुद्दों और समस्याओं को गहरे और विस्तृत रूप से चित्रित किया है। एक महिला की पहचान की खोज और खुद को फिर से परिभाषित करना उनके उपन्यासों में प्रमुख रूप से दिखाई देता है, और उनके कथा साहित्य में महिला पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिलाओं की समस्याओं और दुविधाओं के प्रति उनकी गहरी समझ और सहज अंतर्दृष्टि उन्हें समकालीन महिलाओं का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करने में मदद करती है। वह महिलाओं की भावनात्मक और आध्यात्मिक प्रतिक्रियाओं की पड़ताल और व्याख्या करती हैं, साथ ही उनके संघर्षों और कठिनाइयों को सहानुभूतिपूर्वक व्यक्त करती हैं। (आर्थर, जे.ए., **2010)**

शशि देशपांडे के उपन्यासों में एक महिला के लिए आत्म-बलिदान से आत्म-प्राप्ति, आत्म-त्याग से आत्म-विश्वास और आत्म-निषेध से आत्म-पुष्टि तक की यात्रा की खोज की गई है। उनके सभी उपन्यासों में नारी चेतना की अनुभूति होती है। उनके पहले पूर्ण लंबाई वाले उपन्यास **Roots and Shadows** में नायिका इंदु एक पुरुष प्रधान और परंपराओं से बंधे समाज में पीड़ा और घुटन का अनुभव करती है। जब वह समाज द्वारा निर्धारित कठोर कोड के अनुरूप होने से इनकार करती है, तो वह खुद को अलग-थलग पाती है। अपने पसंदीदा व्यक्ति से विवाह करने के बाद उसे मोहभंग होता है, जब वह अपने शिक्षित और प्रगतिशील पति को औसत भारतीय पुरुष से अलग नहीं पाती। (टिफिन, ए.एच., **2007)**

शशि देशपांडे का उपन्यास **The Dark Holds No Terror** एक महिला की आधुनिक दुविधा को दर्शाता है, जो अपनी पहचान और व्यक्तित्व पर हमलों का दृढ़ता से विरोध करती है। इस उपन्यास की नायिका, सरू, एक प्रगतिशील महिला का प्रतीक है, जो अपने जीवन में हमेशा अपनी इच्छा और प्रभाव का पालन करने की कोशिश करती है। वह हमेशा कम यात्रा वाली सड़क लेना पसंद करती है और उन महिला मित्रों से घृणा करती है, जो खुद को पारंपरिक रूढ़िवादिता में ढाल लेती हैं और पुरुषों के साथ चुपचाप, अनाम वेटर की भूमिका निभाती हैं। सरू का आदर्श मित्र नालू, एक गरिमामयी और स्वावलंबी शिक्षक, है, जो देश के प्रति अपार सम्मान रखता है और समाज से अलग रहते हुए अपने दृढ़ विश्वास के साथ एक सार्थक जीवन जीता है। सरू के लिए नालू का आदर्श जीवन का एक मॉडल है, जो उसे अपनी स्वतंत्रता और आत्म-निर्भरता की ओर प्रेरित करता है।

सरू और मनु का विवाह एक आशीर्वाद की तरह था, क्योंकि सरू खुद को स्वायत्तता प्राप्त करने के लिए और अपने माता-पिता के घर में खोए हुए प्यार को सुरक्षित करने के लिए शादी करती है। मनु उसके उद्धारक के रूप में था, जो उसे उसके असुरक्षित जीवन से बाहर निकालता है। मनु के साथ विवाह उसकी स्त्री संवेदनशीलता की पुष्टि करता है।

हालांकि, जैसे-जैसे सरू अपने करियर में सफलता प्राप्त करती है, वह मनु के गौरव को चोट पहुँचाती है, जिससे उसका प्यार धीरे-धीरे खत्म होने लगता है। मनु चिढ़कर और नीच साथी बन जाता है, और बिस्तर ही एकमात्र ऐसा स्थान बन जाता है जहाँ वह अपनी शक्ति का दावा कर सकता है। सरू के करियर में सफलता, मनु के लिए एक समस्या बन जाती है, लेकिन फिर भी वह उसे अपनी नौकरी छोड़ने की सलाह नहीं देता, क्योंकि वह खुद मध्यवर्गीय जीवन की सामान्य राह पर वापस लौटने का सपना नहीं देख सकता।

सरू के जीवन में बदलाव तब आता है जब वह अपने पिता के घर में रहती है और उसके सेक्स के प्रति दृष्टिकोण में धीरे-धीरे परिवर्तन होता है। वह अपनी दुनिया, अपने स्थान और अपने जीवन के प्रति एक नए दृष्टिकोण के साथ बदलती है। इस परिवर्तन के कारण मनु का स्थान उसकी जिंदगी में महत्वहीन हो जाता है। माता-पिता के प्यार से इनकार और अपने पति की कुंठाओं से जूझते हुए, सरू अपने मानस में एक कठिन यात्रा से गुजरती है। वह अपराधबोध, शर्म और अपमान से मुक्त होकर अपने जीवन पर पूर्ण नियंत्रण में उभरती है। (कदम, एम.जी., 2008)

हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना

उपर्युक्त दोनों विश्लेषित उपन्यासों में नारीवादी चेतना स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। इन उपन्यासों के माध्यम से शशि देशपांडे और मंजू कपूर दोनों ने भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की दुर्दशा, उनके भावनात्मक संघर्ष, खुद को खोजने की ललक और दमनकारी परिस्थितियों के खिलाफ उनकी लड़ाई को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। इन लेखकों ने महिलाओं के जीवन की जटिलताओं और चुनौतियों को उकेरते हुए, समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों की खोज को अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाया है।

पहले के समय में महिला लेखकों को अपनी रचनाओं के लिए पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता था और वे काल्पनिक नामों का इस्तेमाल करती थीं। साहित्य में महिला लेखकों की भूमिका को नकारा जाता था, और उनका स्थान हमेशा पुरुषों की छाया में था। इतिहास में पुरुषों को स्मृति और महत्व दिया जाता था, जबकि महिलाओं की भूमिका को अक्सर नज़रअंदाज किया जाता था। हालांकि, समय के साथ महिलाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से इस पारंपरिक व्यवस्था को चुनौती दी और अपनी आवाज़ को सशक्त रूप से प्रकट किया।

भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को हमेशा हाशिए पर रखा गया है, और उनका भविष्य उनके श्रम, कौशल, और शरीर के जैविक कार्यों पर निर्भर किया जाता था। महिला को हमेशा प्रजनन, बच्चों की देखभाल और घर के कामकाजी दायित्वों तक सीमित कर दिया गया। इस प्रकार, महिलाओं के लिए अवसरों की सीमा निर्धारित कर दी गई थी, और समाज ने पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग नियम बनाए थे। महिला को एक अच्छे घर की स्त्री, आदर्श पत्नी और देखभाल करने वाली माँ के रूप में चित्रित किया जाता था, जो हमेशा पुरुष के अधीन रहती थी।

आज के समाज में महिलाओं के लिए सरकार द्वारा कई कार्यक्रम और नीतियाँ बनाई गई हैं, जो समान अधिकार और अवसर प्रदान करने का प्रयास करती हैं। हालांकि, इन नीतियों के बावजूद, परिणाम अभी भी सीमित हैं और महिलाओं को बराबरी की स्थिति में लाने के लिए संघर्ष जारी है। समाज में भेदभाव और असमानता की जड़ें गहरी हैं, और महिलाओं को हर स्तर पर वंचित किया जाता है। इसलिए, महिला लेखकों का योगदान न केवल साहित्यिक रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज में बदलाव की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

"द बाइंडिंग वाइन्स" और "ए मैटर ऑफ टाइम" जैसे उपन्यासों में शशि देशपांडे ने महिलाओं की समस्याओं, उनके दर्द और दमन को अपनी लेखनी के माध्यम से गहरे तरीके से प्रस्तुत किया है। दोनों उपन्यासों में नारीवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ देशपांडे ने

महिला पात्रों की कठिनाइयों, उनके शारीरिक और मानसिक शोषण, और सामाजिक दबावों के खिलाफ उनकी लड़ाई को दिखाया है।

"द बाइंडिंग वाइन्स" में उर्मी की कहानी को ध्यान में रखते हुए, उपन्यासकार ने वैवाहिक बलात्कार, शारीरिक हिंसा और मानसिक दमन का सामना कर रही महिलाओं की त्रासदी को चित्रित किया है। उर्मी अपनी त्रासदी और पीड़ित महिलाओं की कहानियों को संजोने की कोशिश करती है, जिनमें मीरा जैसी महिलाएँ शामिल हैं, जो अपनी भावनाओं को कविताओं के माध्यम से व्यक्त करती हैं। इसके अलावा, कल्पना की कहानी को भी सामने लाया गया है, जो बलात्कार की शिकार हुई है और अपने मृत्यु शय्या पर है। यह उपन्यास इस दर्दनाक सच को उजागर करता है कि बलात्कार की शिकार महिलाएँ, चाहे विवाह के बाहर हो या भीतर, समाज के अपमान से बचने के लिए चुप रहकर सहन करती हैं। उनके पास इस दर्दनाक अनुभव को सार्वजनिक करने का साहस नहीं होता। इस उपन्यास में देशपांडे उर्मी के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति को और अधिक सशक्त रूप में पेश करती हैं, जो अब पहले से कहीं अधिक स्वतंत्र तो हैं, लेकिन फिर भी दमन, हिंसा और अभाव का सामना कर रही हैं।

वहीं "ए मैटर ऑफ टाइम" उपन्यास में, शशि देशपांडे ने खुद को महिलाओं की समस्याओं से बाहर निकालकर, उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। यह उपन्यास एक ही परिवार की तीन पीढ़ियों की महिलाओं की कहानी है, और यह दिखाता है कि कैसे वे उस त्रासदी का सामना करती हैं जो उन्हें अपने जीवन में घटित होती है। गोपाल और सुमी के परिवार की टूटन, सुमी की व्यक्तिगत पीड़ा, और परिवार के अन्य सदस्यों की प्रतिक्रिया को चित्रित करते हुए, देशपांडे ने यह दिखाया है कि कैसे महिलाएँ समाज और परिवार की जटिलताओं से निपटते हुए अपने अस्तित्व की खोज करती हैं। सुमी का सामना अपने पति के द्वारा परित्याग से होता है, लेकिन वह टूटने की बजाय संघर्ष करती है और अपने जीवन को नया दिशा देती है। यह सुमी के मानसिक साहस और आत्मविश्वास की कहानी है, जो एक परित्यक्त पत्नी के रूप में परंपरागत सोच को चुनौती देती है।

देशपांडे ने इन दोनों उपन्यासों में महिलाओं की त्रासदी और संघर्ष को चित्रित करते हुए यह भी दिखाया कि वे आज की दुनिया में पहले से कहीं अधिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ रही हैं, लेकिन फिर भी कई समाजिक और मानसिक संघर्षों का सामना कर रही हैं। उन्होंने यह संकेत दिया कि महिलाओं को परिवार और समाज में अपने उचित स्थान और सम्मान का हक मिलना चाहिए, क्योंकि वे ही परिवार की नींव को मजबूती से खड़ा करती हैं।

निष्कर्ष

अंग्रेजी में भारतीय महिला उपन्यासकारों का यह व्यापक सर्वेक्षण इस तथ्य को उजागर करता है कि उन्होंने अंग्रेजी कथा साहित्य के क्षेत्र में अपनी स्थायी छाप छोड़ी है। डायस्पोरिक दृष्टिकोण, विशेष रूप से, समकालीन लेखकों के बीच एक कलात्मक आंदोलन के रूप में उभरा है। भारतीय डायस्पोरिक लेखन पाठकों को सांस्कृतिक आयामों, परंपराओं, पहचान और आत्म-खोज जैसे विभिन्न विषयों से परिचित कराता है। इन भारतीय डायस्पोरिक कृतियों में सबसे अधिक पुनरावृत्त होने वाला तत्व है - प्रवासित राष्ट्र में पहचान की खोज।

यह दर्शाता है कि अंग्रेजी में लिखने वाली भारतीय महिला उपन्यासकारों ने सफलतापूर्वक इस भाषा का उपयोग किया है और इसे अपने सांस्कृतिक अनुभवों और अभिव्यक्तियों का वाहक बना लिया है। इसके परिणामस्वरूप, कई भारतीय महिला उपन्यासकारों ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक पुरस्कार जीते हैं, और पूरी दुनिया में अपनी पहचान स्थापित की है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, ए. (**2014**)। आस्था बनाम विज्ञान: कमला माकनदाय की ए साइलेंस ऑफ डिजायर का एक अध्ययन। शोधार्थी।
2. आलम, एफ. (**1996**)। भारती मुखर्जी। न्यूयॉर्क ट्वेन पब्लिशर्स।
3. आर्थर, जे.ए. (**2010**)। अफ्रीकी डायस्पोरा आइडेंटिटी: नेगोशिएटिंग कल्चर इन ट्रांसनैशनल माइग्रेशन। लेक्सिंगटन पुस्तकें।
4. ऐशक्रॉफ्ट, बी., ग्रिफिथ्स, जी., और टिफिन, एच. (**2007**)। उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन: प्रमुख अवधारणाएं (दूसरा संस्करण, पीपी. **61-62**)। लंदन, न्यूयॉर्क: रूटलेज।
5. कदम, एम.जी. (**2008**)। द नेमसेक: ए मोजेक ऑफ हाशिएलिटी, एलियनेशन, नॉस्टेल्जिया और परे। एन. दास (संपा.) में, झुंपा लाहिड़ी क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स (पीपी. **121-122**)। नई दिल्ली: पेनक्राफ्ट।
6. नाइक, एम.के. (**2006**)। अंग्रेजी साहित्य का इतिहास। दिल्ली: साहित्य अकादमी।
7. परांजपे, एम. (**2003**)। राइटिंग अक्रॉस बाउंड्रीज: साउथ एशियन डायस्पोरास एंड होमलैंड्स। एम. फ्लूडर्निक (एड.), डायस्पोरा एंड मल्टीकल्चरलिज्म: कॉमन ट्रेडिशन्स एंड न्यू डेवलपमेंट्स (पीपी. **231-260**)। रोडोपी।
8. विजयश्री, सी. (**2001**)। सुनीति नामजोशी: धूर्त अपराधी। नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।